शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

जयद्रथ-वध

कवि- श्री मैथिलीशरण गुप्त

हाँ अप्सराएँ आप तुम पर मर रही होंगी वहाँ,
समता तुम्हारे रूप की त्रैलोक्य में रक्खी कहाँ ?
पर प्राप्ति भी उनकी वहाँ भाती नहीं होगी तुम्हें ?
क्या याद हम सबकी वहाँ आती नहीं होगी तुम्हें ?

भावार्थ

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि पाण्डवों और कौरवों के सेना के बीच भयंकर युद्ध चल रहा है। इसी क्रम में वीर अभिमन्यु युद्ध में मारा जाता है। जब मृत्यु की सूचना पाण्डवों के शिविर में पहुँचती है तो वहाँ की स्थिति काफी भावुक हो जाती है। अपने प्राण प्रिये के शव के पास बैठकर पूर्व में घटित एक-एक घटनाओं को याद करके नाना प्रकार से उत्तरा विलाप करती है। विलाप के क्रम में ही उत्तरा के मन में यह बात आती है कि शायद अभिमन्यु अपनी इतनी अधिक प्रशंसा सुन-सुनकर फूल गया ~~होगा~~ होगा और इसलिए वह अप्सराओं को प्राप्त करने की लालसा करता हुआ स्वर्ग चला गया है।

प्रस्तुत पद्यांश के द्वारा उत्तरा कहती है हे स्वामी जब तुम वहाँ पहुँच ही गये हो तो वे अप्सराएँ तुम्हारे रूप सौन्दर्य को देखकर अपने आप ही तुम पर अपने प्राण न्योछावर कर रहीं होंगी। क्योंकि तुम्हारी सुन्दरता की टक्कर लेने वाला तीनों लोकों में कोई नहीं है। पर तुमको अपना सारा परिवार ही इतना अधिक प्रिय था कि उनको प्राप्त कर लेने के बाद भी उनकी प्राप्ति तुमको अच्छी नहीं लगती होगी। क्या तुमको हम सभी लोगों की याद नहीं आती होगी।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 02/11/20
रा० उ० सं० महावि० सुरखेना, पूर्णियाँ

साहित्य की मूल वस्तु है।

लेखक का यह भी कहना है कि लिखने वाले से पढ़ने वाला कहीं ज्यादा विलक्षण होता है। कभी-कभी तो पढ़ने वाले अर्थ दोहन कर लिखने वाले को वह ख्याति दिला देते हैं जैसा लिखने वाला सोचता भी नहीं है।

केवल किताबी ज्ञान से मंजिल तक नहीं पहुँचा जा सकता है। ज्ञान कहीं से भी प्राप्त किया जा सकता है। अतः लेखक की यह धारणा कि शिक्षा का मतलब जानकारी और चरित्र निर्माण दोनों ही है, पूर्णतः सही है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०अ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
04/11/20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

दिगंत-भाग-2 गद्य भाग

शीर्षक :- ओ सदानीरा (यात्रा संस्मरण)

लेखक :- जगदीशचन्द्र माथुर

व्याख्या :-

" अब वे किलकती नहीं हैं। या तो लाज में गड़ी निस्पंद सरकती रहती हैं, या बरसात के दिनों उन्मत यौवना वीरांगनाओं की भाँति प्रचंड नर्तन करती हैं।"

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत-भाग-2 के 'ओ सदानीरा' पाठ से ली गई हैं। हिमालय से निकलकर चंपारण की भूमि को स्पर्श करती हुई बहने वाली नदियों के विषय में उनके बदलते स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए लेखक जगदीशचन्द्र माथुर ने उक्त स्थान की स्थिति पर चिंतन किया है। यह प्रसंग उसी सन्दर्भ से जुड़ा हुआ है।

लेखक इन पंक्तियों के माध्यम से कहना चाहता है कि वनों के काटने एवं खेतों के निर्माण के कारण धरती नंगी हो गयी है। जिसके कारण नदियों के स्वरूप में तेजी से बदलाव नहीं आता है। लेकिन भूमि एवं वनों के शोषण-दोहन से नदियों का स्वरूप बदल गया है। पूर्व की भाँति ये नदियाँ अब किलकती नहीं। उनकी धाराएँ संकीर्ण एवं कई धाराओं में विभक्त हो गयी हैं। वे अब कभी-कभी प्रचंड वेग से धन-जन का अपार क्षति पहुँचाती हैं। नदियाँ अब स्थिर होकर मन्द गति से बह रही हैं। बरसात के दिनों में अल्हड़ नवयुवती की तरह ये नदियाँ भी प्रचंड रूप धारण कर लेती हैं और नर्तन करते हुए धन-जन को काफी क्षति पहुँचाती हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक का मन्तव्य है कि मानव ने अपने निजी स्वार्थ के लिए प्राकृतिक सुषमा का भरपूर शोषण किया है। इस क्षेत्र के वनों की अंधाधुंध कटाई,

शेष आगे

विकास की दौड़, भूमि के अपहरण तथा ट्रैक्टर द्वारा जुताई सरस सलिला नदियों को श्रीहीन कर दिया है।

डॉ० देवचरण प्रसाद 02/11/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ